हिन्दी

अलंकार

Hindi by Navneet Sir

खोल दे पंख मेरे
कहता है परिंदा,
अभी और उड़ान बाकी है,
जमीन नहीं है मंजिल मेरी,
अभी पूरा आसमान बाकी है ।

अलंकार

अलंकार ट्रिक

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के चार भेद

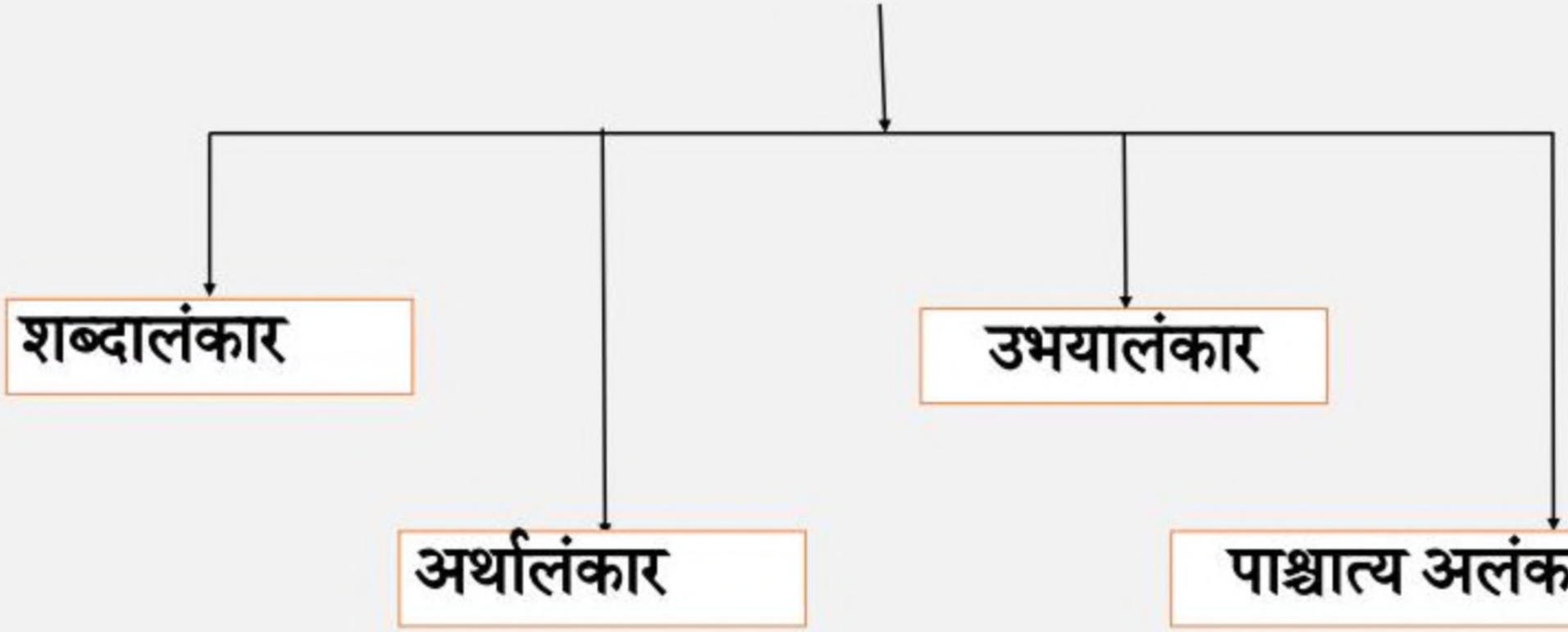

शब्दालंकार

शब्दालंकार वें अलंकार है, जहाँ शब्द विशेष के ऊपर अलंकार की निर्भरता हो। शब्दालंकार में शब्द विशेष के प्रयोग के कारण ही कोई चमत्कार उत्पन्न होता है, उन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है।

जैसे-

1. वह बाँसुरी की धुनि कानि परै,कुल-कानि हियो तजि भाजति है।
2. **भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही**

शब्दालंकार

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं

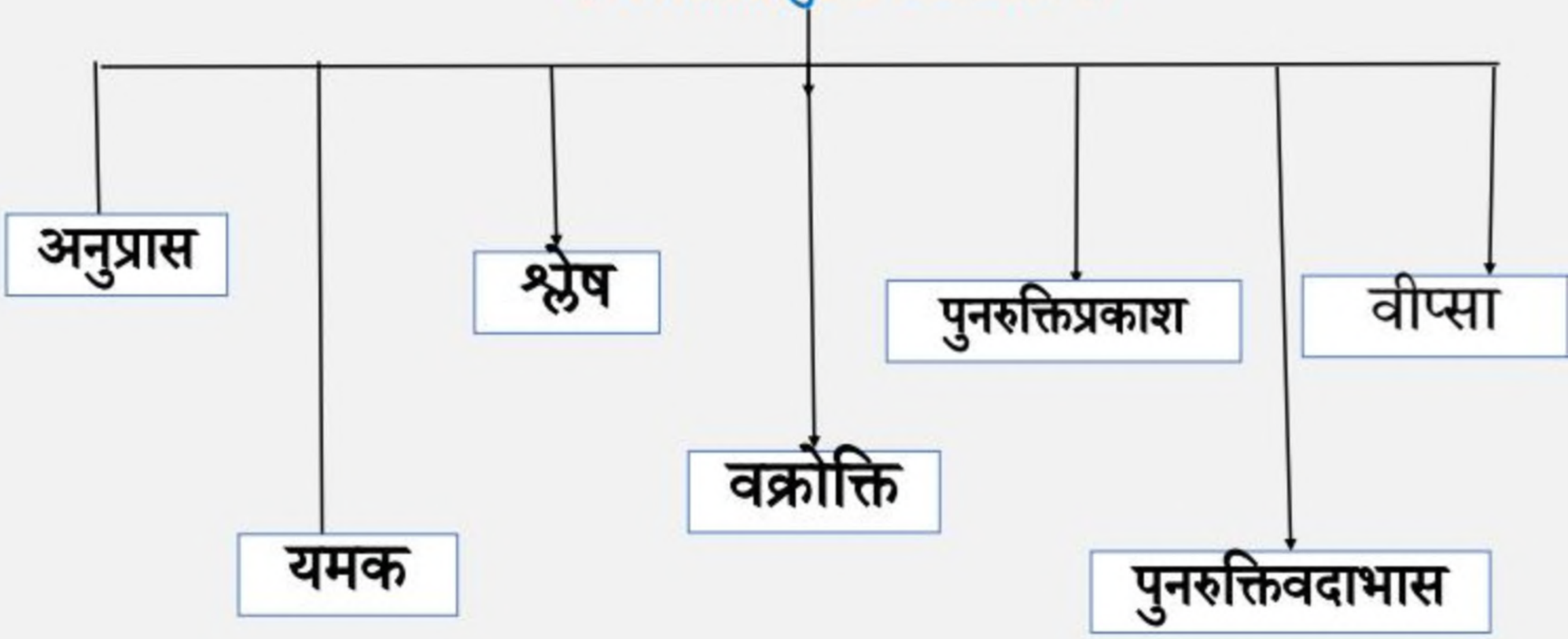

अनुप्रास अलंकार

जिस रचना में व्यंजनों की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमंत बुलाये।।

इस चौपाई में पूर्व में **म** की और उत्तर में **स** की तीन-तीन बार आवृत्ति हुई है, पर इनमें स्वरों का मेल नहीं है। कहीं-कहीं स्वर भी मिल जाते हैं;

जैसे -सो सुख सुजस सुलभ मोहिं स्वामी।

इसमें **स** की आवृत्ति पाँच बार हुई है, पर स्वरों का मेल (सुख, सुजस, सुलभ) केवल तीन बार हुआ है।

जैसे - 'सुरभित सुन्दर सुखद सुमन तुम पर खिलते हैं।'

इस काव्य-पंक्ति में पास-पास प्रयुक्त **'सुरभित'**, **'सुन्दर'**, **'सुखद'** और **'सुमन'** शब्दों में **'स'** वर्ण की आवृत्ति हुई है।

शब्दालंकार

वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहते हैं

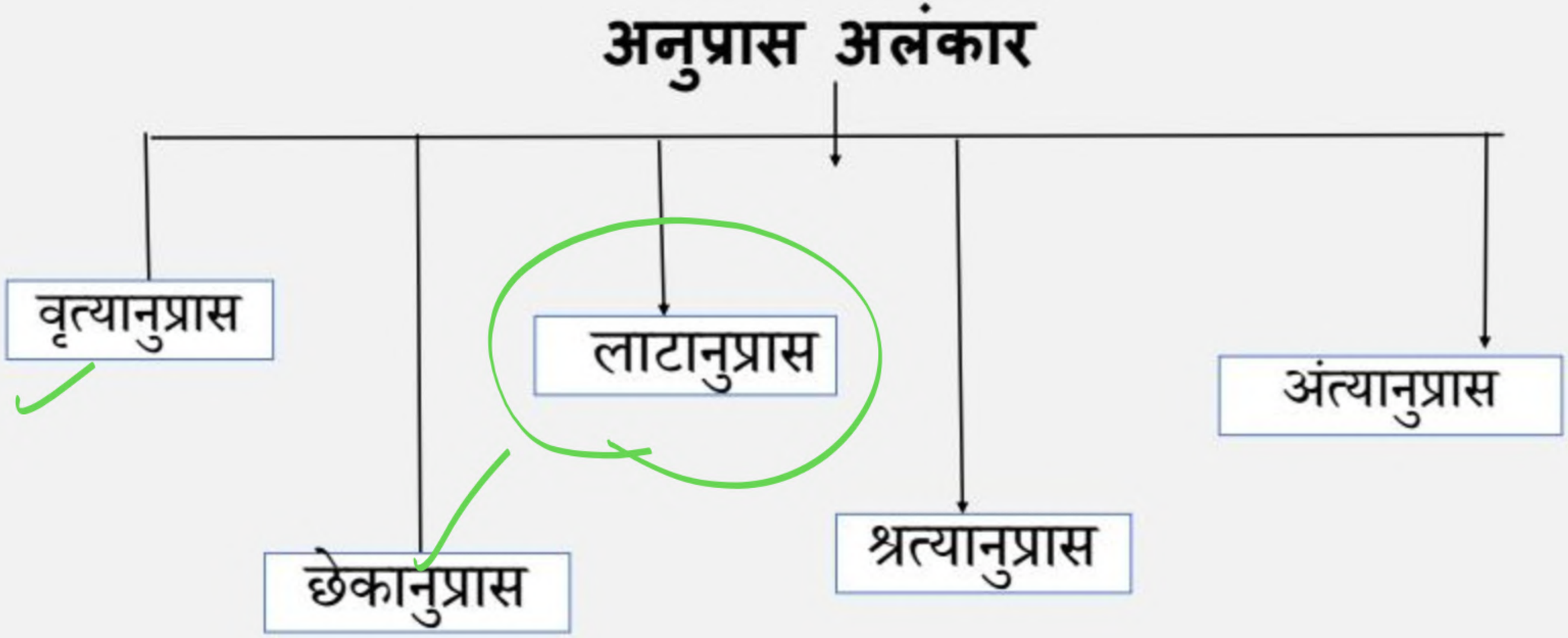

वृत्यानुप्रास

जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ वृत्यनुप्रास होता है

एक व्यंजन की अनेक बार आवृत्ति के द्वारा-

सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा॥

एक स की अनेक बार आवृत्ति

बिधिनिषेधमय कलिमल हरनी। करम कथा रबिनन्दिनी बरनी।

यहाँ 'र' 'ब'

छेकानुप्रास

अनेक व्यंजनों की एक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति

छेक का अर्थ है वाक्-चातुर्य। अर्थात् वाक् से परिपूर्ण एक या एकाधिक वर्णों की आवृत्ति को **छेकानुप्रास** कहा जाता है।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

यहाँ अनेक व्यंजनों-'पद' 'पदुम' में प, द और 'सुरुचि' 'सरस' में स, र की स्वरूपतः और क्रमतः एक बार आवृत्ति है

इस करुणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती है।

उपरोक्त पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति क्रम से एक बार है

लाटानुप्रास अलंकार:-

जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवृति उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। यह यमक का ठीक उलटा है। इसमें मात्र शब्दों की आवृत्ति न होकर तात्पर्य मात्र के भेद से शब्द और अर्थ दोनों की आवृत्ति होती है

1. "रामभजन जो करत नहिं, भव- बंधन- भय ताहि।
रामभजन जो करत नहिं, भव-बंधन-भय ताहि।।"

1. पंकज तो पंकज, मृगांक भी है मृगांक री प्यारी।
मिली न तेरे मुख की उपमा देखी वसुधा सारी।।

श्रुत्यानुप्रास अलंकार:-

जहाँ कानो को मधुर लगने वाले वर्णों की आवृति होती है, मुख के उच्चारण स्थान से संबंधित विशिष्ट वर्णों के साम्य को श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है।

= जिस अलंकार में एक व्यंजन (वर्ग) आवृति

उदाहरण:-

1. " दिनांत था ,थे दीननाथ डुबते,
   सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।"
2. तेहि निसि में सीता पहँ जाई।
   त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई॥

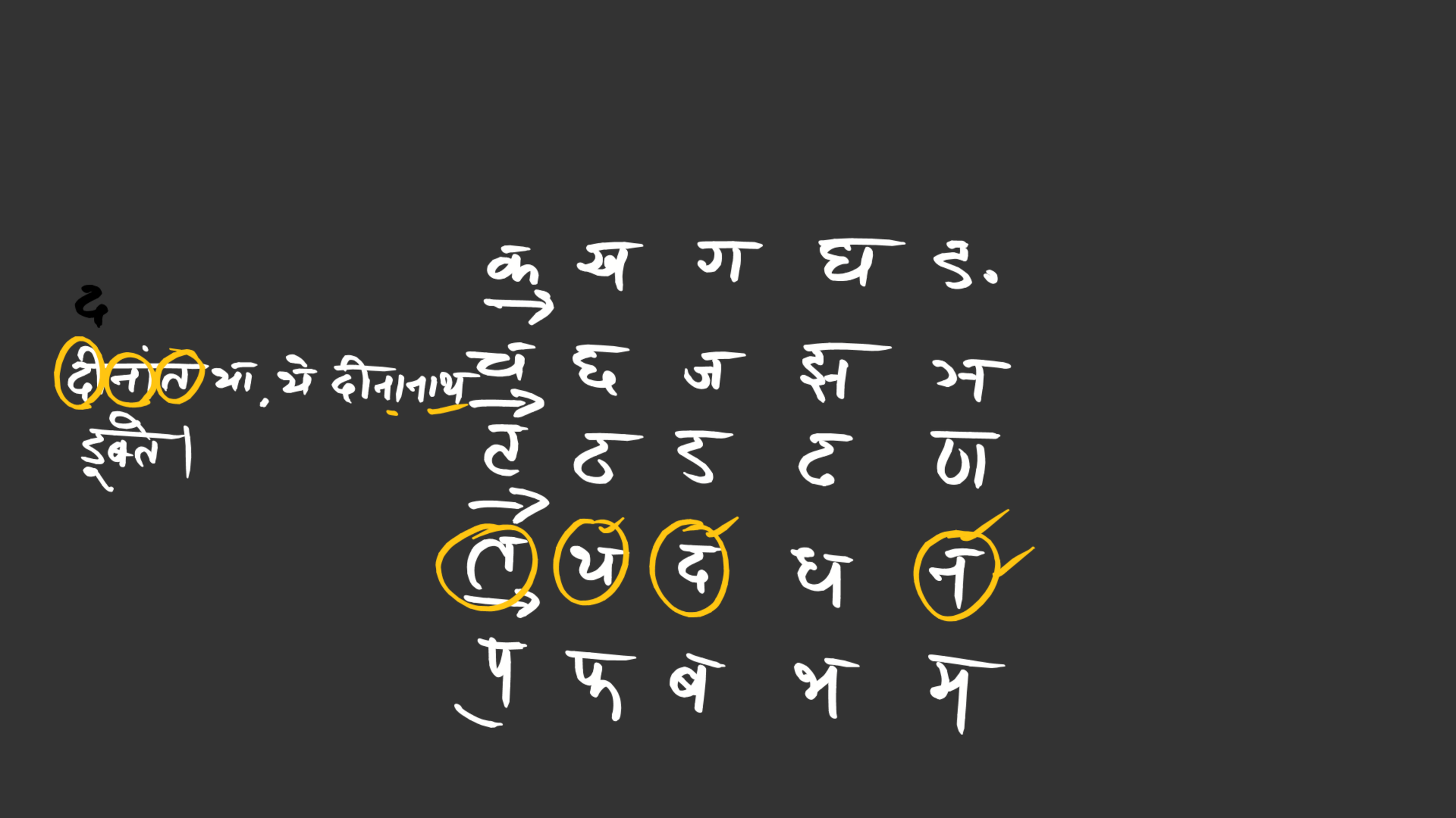

5

दीनांत था, ये दीनानाथ

हुआ है।

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

अन्त्यानुप्रास अलंकार:-

जहाँ अंत में तुक मिलती हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।जहाँ पद के अंत के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की साम्यमूलक आवृत्ति हो

उदाहरण:-

1."लगा दी किसने आकर आग।
कहाँ था तू संशय के नाग?"

2. गुरु पद मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन।।

Trick

एक शब्द फिर फिर परे, जहाँ अनेकनबार।
अर्थ और ही और हो, सोये यमक अलंकार॥

यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार होती है, परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, वहाँ यमक अलंकार होता है।जहाँ शब्दों या वाक्यांशों की आवृति एक से अधिक बार होती है, लेकिन उनके अर्थ सर्वथा भिन्न होते हैं

उदाहरण

Time

तीन बेर खाती, वो अब तीन बेर खाती हैं।

"कनक कनक से सो गुनी, मादकता अधिकाय,
वा खाय बौराय जग, या पाय बोराय।।'

य

से

यमक अलंकार

श्लेष अलंकार

श्लेष का अर्थ है 'चिपका हुआ'। इस अलंकार में प्रयुक्त शब्दविशेष में कई अर्थ रहते हैं। जब पंक्ति में एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते है तब वहाँ **श्लेष अलंकार** होता है

रावन सिर सरोज बनचारी चलि रघुवीर सिलीमुख धारी।

(सिलीमुख' के अर्थ-बाण, भ्रमर)

सुबरन को ढूँढ़त फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर।('सुबरन' के अर्थ–सुन्दर वर्ण, सुन्दर स्त्री और सोना।)

पी तुम्हारी मुख बास तरंग

आज बौरे भौरे सहकार।

(बौरे-भौरे के प्रसंग में मस्त होना आम के प्रसंग में–मंजरी निकलना)

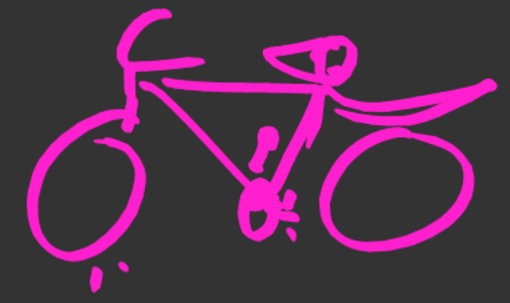

श्लेष अलंकार

एक शब्द के

अनेक सन्दर्भों में अलग-2

प्रयोग किया जाना

चिपना

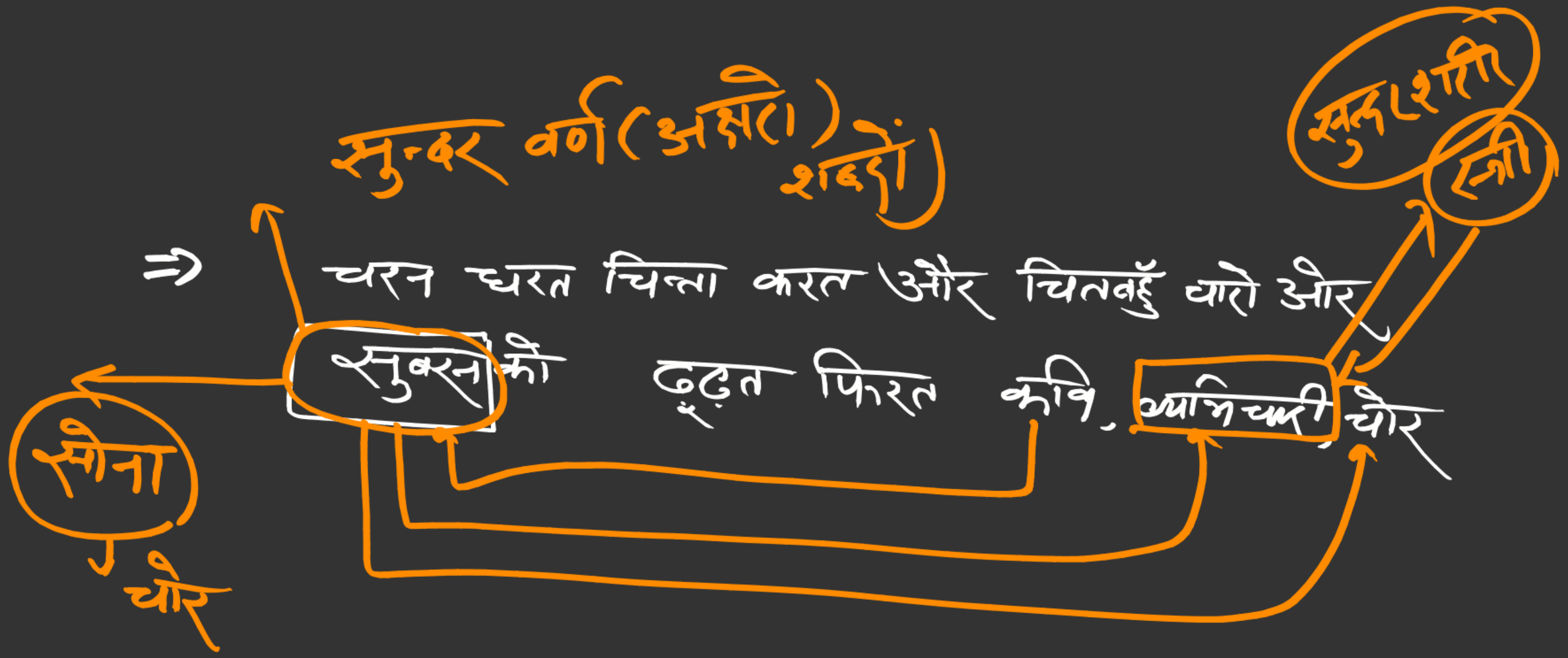

⇒ चरन धरत चिन्ता करत और चितवहुँ चारो ओर,
सुबरन को ढूंढ़त फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर

सुबरन → सुन्दर वर्ण (अक्षर) शब्दों [कवि]

सुबरन → सोना → चोर

व्यभिचारी → सुन्दर शरीर (स्त्री)

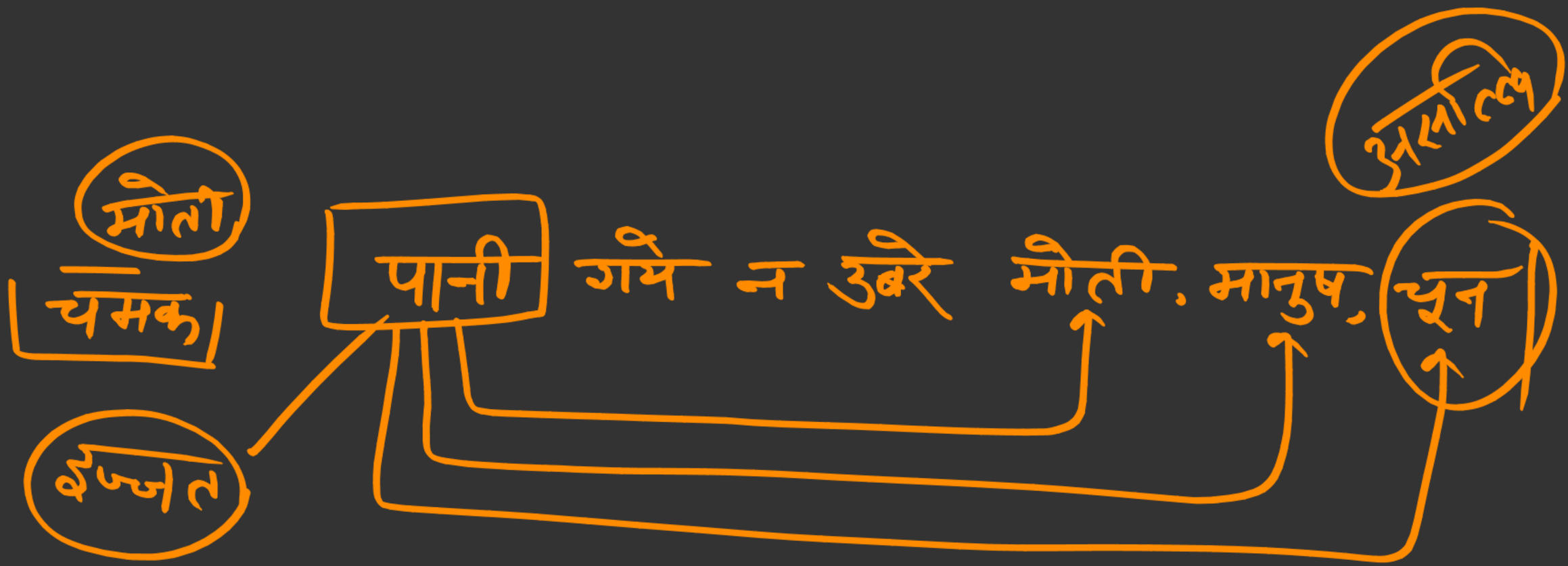

पानी गये न उबरे मोती, मानुष, चून
मोती
चमक
इज्जत
अस्तित्व

श

से

श्लेष अलंकार

वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ किसी बात पर वक्ता और श्रोता की किसी उक्ति के सम्बन्ध में,अर्थ कल्पना में भिन्नता का आभास हो, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।जिस शब्द से कहने वाले व्यक्ति के कथन का अभिप्रेत अर्थ ग्रहण न कर श्रोता अन्य ही कल्पित या चमत्कारपूर्ण अर्थ लगाये और उसका उत्तर दे, उसे वक्रोक्ति कहते हैं।

एक कबूतर देख हाथ में पूछा, कहाँ अपर है ?
उसने कहा, अपर कैसा ? वह तो उड़ गया सपर है।।

उ

से

उपमा अलंकार

अर्थालंकार-

काव्य में जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

उपमा अलंकार- उप + मा = उपमा

यहाँ उप का आशय है समीप और मा का आशय है मापना। अर्थात् समीप रखपर मिलान करना या समानता बतलाना। जब किसी वस्तु का वर्णन करते हुए उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी तुलना करते हैं, तब उपमा अलंकार होता है।

उपमा के चार अंग होते हैं-

1. **उसमेय-** जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता की जाती है।
2. **उपमान-** जिस व्यक्ति या वस्तु से समानता की जाती है।
3. **साधारण धर्म-** वह गुण/धर्म जिसकी तुलना की जाती है।
4. **वाचक शब्द-** वह शब्द जो रूप, रंग, गुण और धर्म की समानता दर्शाता है।

यथा- सा, सी, सम, समान आदि।

आप जाइए तो →

80%

8 ~~5~~

37

33

Thank You!